International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 13-02-2026, Accepted: 16-03-2026, Published: 31-03-2026
Volume 8, Issue 1, 2026, Page No. 46-47

आदिवासी स्त्री की त्रासदीः अल्मा कबूतरी

डॉ. स्मृति उरांव
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय कोटा बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
आदिवासी जीवन केन्द्रीत उपन्यासकारों ने तटस्थता के साथ पात्रों, समस्याओं, उपेक्षाओं, आकांक्षाओं और अभाव से निर्माण विकृतियों, विडंबनाओं विसंगतियों तथा मानवीय संवेदनाओं को उजागर किया है। वर्तमान हिन्दी साहित्य में मैत्रेयी पुष्पा का बहुमूल्य योगदान है। अल्मा कबूतरी उपन्यास के माध्यम से आदिवासी जीवन का बड़ी ही मार्मिक दृश्य को लेखिका द्वारा प्रस्तुत किया गया है। जनमानस की पीड़ा, स्वर, त्रासदी के साथ–साथ समाज के मानसिकता को अपने उपन्यास के माध्यम से उधेड़ा गया है।

मूल शब्दः त्रासदी, मानसिकता, विडम्बना, उपेक्षा, जनजाति आदिवासी

प्रस्तावना
मैत्रेयी पुष्पा द्वारा लिखित उपन्यास ''अल्मा कबूतरी'' एक बहुचर्चित उपन्यास है। इस उपन्यास बुलेलखण्ड के कबूतर आदिवासी जाति से जुड़ा कहानी है। जिसमें एक अभावग्रस्त स्त्री की कहानी है। यह उपन्यास समाज के मुख्य प्रवाह से कटी हुई कबूतरा जाति के स्त्री–पुरूशों के जीवन का अनिवार्य घटक है। दर–दर भटकना किसी के भी खेत में डेरे डाले बसना और आजिविका के लिए मजबूरी में चारी करना या दारू की भट्ठी लगाना यह इस कबूतरा नामक आदिवासी जाति की विशेषता है। उपन्यास में लेखिका आदिवासीयों की रीति, परम्परा, खान–पान रहन–सहन, सभ्यता विचार–धारा वेश–भूशा, तथा संस्कृति को वास्तविक परिस्थिति को उभारने का प्रयास किया है।

''अल्मा कबूतरी'' उपन्यास
अल्मा कबूतरी उपन्यास कबूतरा जनजाती की महिलाओं का यौन शोशण, पुरूषों का जंगल में रहना, तथा समाज की मुख्य धारा से बहिश्करण होने की कहानी है। इसके प्रमुख पात्र अल्मा, तथा कदमबाई और भूरीबाई है। यह कहानी सभ्य समाज के लोगों द्वारा कबूतरा स्त्रीयों के भोशण के यथार्थ को दिखाती है। जिसमें अल्मा अपनी अस्मिता और सम्मान के लिए संघर्श करती है।
उपन्यास में कबूतरा जनजाति की नारियों की तीन पीढ़ियों के संघर्श–गाथा है। पहली पीढ़ी भूरीबाई, दूसरी पीढ़ी कदमबाई और तीसरी पीढ़ी अल्मा कबूतरी है। तीनों पीढ़ी की नारियों के संघर्शमय जीवन को इस उपन्यास में चेतनशीलता के साथ चित्रित किया गया है। पहली पीढ़ी की नारी पात्र भूरी एक विद्रोही नारी के रूप में ही नजर आती है। भूरी कबूतरा जाति की साहसीक व हिम्मतवाली नारी है। वह अपने हाथों की लकीरों पर कम स्वयं के कर्म पर ज्यादा विश्वास रखती है। भूरी का यह मानना है कि हाथ की लकीरों को देखने से कुछ होने वाला नहीं है। यह कहती है खींचो तो पत्थर की लकीर, मिटाने से भी न मिटे।
भूरी बाल्यवस्था से ही अपनी दादी से राजा–महाराजाओं के किस्से–कहानी सुना करती है। और अपने आप को उन्हीं राजा, महाराजाओं के समान समझती है। देश की आजादी के बाद वह अपने देश के राजा को देखने की जिज्ञासु होती है। वह अपने पति वीरसिंह के साथ कबुतराओं का रूप धारण करके सभ्य लोगों की भांति कपड़े पहनकर झांसी के राजा के दरबार में राजा को देखने जाती है। झांसी में सिपाही की नजरों से छिपकर वह राजा के दर्शन करती है। तथा झांसी राज्य के जनसमुदाय की भीड़ में राजा का भाशण सुनती है। राजा के सभी जाति समुदाय को समान स्थान, समान हक, समान नागरिकता देने वाली भाषण सुनकर उत्साहित व जागरूक होती है। और अपने कबूतरा समाज की जीवन भौली, रहन–सहन, विचारधारा में परिवर्तन लाने की सोचती है। लेकिन उसके जात के लोग उसके इस तरह की विचारधारा और विचारशील बातों को सुनकर भूरीबाई की खूब हंसी उड़ाती है। भूरी का पति उन्हीं विचारधारा से उत्तेजित व जागरूक होकर पलटन में भर्ती होने जाता है। किन्तु पुलिस उसे हथियार चुराने आया है कहकर गिरफ्तार कर लेती है और अपनी बात सही भाबित न कर सके इसलिए वीरसिंह को कचहरी के सामने गोली मार दी जाती है।
भूरी पति के मृत्यु होने पर आंसू नहीं बहाती, वह रोने के भाव को कमजारी का लक्षण मानती है। वह कमजोर नारी नहीं बनना चाहती। भूरी अपने पति की अमानत अपने चार माह के बेटे रामसिंह को पढ़ा–लिखाकर इसी कचहरी के दरवाजे पर खड़ा कर देगी। भूरी अपनी बिरादरी की अकेली नारी होती है। जो अपने बेटे को चोरी डाका, गुलेल, कुल्हाड़ी व डंडा न थमाकर पुस्तक पोथी देती है। भूरी अपना पूरा जीवन अपने बेटे को पढ़ाने के लिए कुर्बान कर देती है। वह अपने बेटे को अच्छे संस्कार देकर योग्य व्यक्ति बनाती है। रामसिंह कबूतरा जनजाति का एक मात्र पढ़ा–लिखा शिक्षक बन जाता है।
अल्मा कबूतरी उपन्यास में दूसरी पीढ़ी की नारी पात्र कदमबाई कबूतरा जनजाति की नारी है। उसकी भादी कबूतरा जाति के जंगलिया से होता है। जो बिरादरी व क्षेत्र में नामी चोर माना जाता है। किंतु धोखे से पुलिस उसे मार देती है। पति के मृत्यु के प चात कदमबाई एक बेटे को जन्म देती है। कदमबाई अपने आप को महाराणा प्रताप का वंशज मानते हैं इसलिए कदमबाई अपने बेटे का नाम राणा रखती है। कदमबाई कबूतरा जाति की नारी होने के साथ–साथ उसमें हिम्मत व आत्वविश्वास है। वह अपने बेटे को पति जंगलिया के जैसे निडर व निर्भिक बनाना चाहती है। पिछली पीढ़ी भूरीबाई अपने बेटे रामसिंह को पढ़ा–लिखाकर योग्य शिक्षित व्यक्ति बनाना चाहती है। लेकिन कदमबाई की सोंच समाज व जाति में हिम्मत व बहादूरी के साथ होना मानती है। इसलिए कदमबाई अपने बेटे राणा को भी अपनी बिरादरी में सबसे हिम्मत–वाला चोर बनाना चाहती है। राणा जब सात वर्श का होता है तो कदमबाई कुल्हाड़ी, गुलेल लाठी चलाना सिखाती है। कदमबाई अपने हिम्मत व साहस से जीवन में संघर्श करती हुई विधवा नारी का जीवन कितना कष्टप्रद होता है यह नारी स्वयं जानती है। जो समाज घूमंतू जनजातियों में बिना पति के जीवन व्यतीत करती है कदमबाई संघर्श करती हुई सामाजिक बंधनों को तोड़ती हुई स्वतंत्र जीवन निर्वहन करती है। वह पुलिस

व ठेकेदारों के भाोशण व अत्याचार से बहादुरी के साथ मुकाबला करती है। कदमबाई राणा के बात–बात पर मार्गदर्शन व हौसला बढ़ाती है। वह कहती है देखता नहीं पुलीस पीटने आ जाती है। ठेकेवाले बेबात में हमें खदेड़ते हैं। लेकिन राणा सीधा–साधा है। वह लूटपाट करना, चोरी करना व गुलेल से चिड़िया मारना गुनाह मानता है। वह गांव के सभ्य लोगों के हम उम्र के बच्चों से दोस्ती करता है। कदमबाई राणा को अच्छे लोगों दोस्ती कराना सिखाती है। और राणा को गुलेल चलाना, लाठी चलाना सिखाती है।

राणा की पढ़ने की ललक देखकर कदमबाई उसे गांव के स्कूल में प्रवेश कराती है। तथा उसके पढ़ाई–लिखाई को देखकर अपना सारा दुःख दर्द भूल जाती है। राणा को खुश देखकर स्वयं झूम उठती है। किन्तु कदमबाई की खुशी ज्यादा दिन तक नहीं रहती क्योंकि बच्चों के साथ–साथ मास्टर भी राणा के जाति को लेकर अपमानित करने लगते हैं। एक दिन राणा स्कूल से आते रहता है तब मंसाराम की पत्नी कुत्ते से कटवा देती है। इसमें कदमबाई अत्यंत क्रोधित होती है। और कहती है– खुद मिटना मंजूर है उसे राणा की ओर कोई उंगली उठाएगा तो उसे काट देगी। इस तरह कदमबाई खुद को जागृत कर सभ्य लोगों पर प्रहार करती है। गांव के लोग नहीं चाहते कि कबूतरा जनजाति के लोग पढ़ाई करे। इस प्रकार कदमबाई के चरित्र नारी चेतना तथा स्त्री की त्रासदी को दिखाता है।

उपन्यास में तीसरी पीढ़ी अविस्मरणीय पात्र और मील का पत्थर है, नायिका अल्मा कबूतरी जिसके नाम से यह उपन्यास का नाम रखा गया है। जो जागरूक, साहस, और भूरीबाई की पोती है। जिसके पिता रामसिंह कबूतरा जाति का एक मात्र पढ़ा–लिखा इंसान है जो मास्टर इसकी परवरिश पढ़े–लिखे सभ्य लोगों की बेटियों की तरह होती है। जिसमें अपनी दादी भूरीबाई कबूतरी जागृत विचारधारा, साहस, और अक्ल तथा भाक्ल है। अल्मा दिखने में भी सुंदर होती है। जो नि ि चत रूप से भूरी और कदम के आगे गाथा रचती है। इस अर्थ में उसका संघर्श कबूतरा नारी की पीढ़ियों का संघर्श है। इस संघर्श की कोशिश उस स्थान पर ले जाती है। जहां सत्ता में जाने के लिए राजनीतिक क्षेत्र में सहभाग उसका स्वागत करने में उत्सुक है। लेकिन यहां तक आने का मार्ग कठिन व संघर्शपूर्ण होता है। इस सफर में वह अपने बलपन में भाोशित, बलाकृत अपमानित जीवन का दुःख भोगती है। वह सबसे पहले अपमानित जीवन का दुःख भोगती है। वह सबसे पहले अपने मंगेतर राणा को खो देती है। और अपने मित्र और चाहते साथी धीरज की बर्बादी अपने आंखों से देखती है। अल्मा पिता की मृत्यु के बाद किसी वस्तु की तरह दुर्जनसिंह के साथ बलात्कार कर उसे सुरजभान के पास बेच देता है। सुरजभान सत्ता का दलाल है। जो अल्मा को अपनी हवस का शिकार बनाकर, दूसरे नेता अफसरों के सामने पेश करने के लिए रखता है। लकिन किसी तरह वह सुरजभान के चंगुल से भागने में वह सफल हो जाती है। इसमें उसका साथ धीरज देता है। अल्मा भागकर नत्थु के माध्यम से श्रीराम भाास्त्री विधायक व समाज कल्याण मंत्री के घर पहुंचती है। यहां संघर्श करते हुए अल्मा अपने मंजिल की ओर पहुंचती है।

निष्कर्ष

मैत्रेयी पुष्पा का यह उपन्यास कबूतरा जनजाति के महिलाओं का त्रासदी उसके द्वारा भोगे गये घटनाओं को ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत कर समाज में स्त्रियों के संघर्शपूर्ण जीवन को उकेरा है। स्त्री चाहे तो कुछ भी कर सकती है। उपन्यास में स्त्री पात्रों के माध्यम से संघर्श करते हुए अपने लक्ष्य को हासिल करने तक की घटनाओं का बड़ी ही रोचकता लिए प्रस्तुत किया गया है। मैत्रेयी पुश्पा ने भूरीबाई, कदमबाई और अल्मा जैसे आदिवासी नारी जीवन की यंत्रणाओं को अपने उपन्यास में उजागर किया।

संदर्भ सूची

1. मैत्रेयी पुश्पा (2011), अल्मा कबूतरी, राजकमल प्रकाशन आदि।
2. सिंह बी.एन. एवं सिंह जन्मेजय (2003), नारीवाद, रावत पब्लिकेशन दिल्ली।
3. डालमिया, दिनेश नंदिनी एवं मल्होत्रा रश्मि (2003) नये आयामों को तलाशती नारी, नवचेतन प्रकाशन नई दिल्ली।
4. कालिया, ममता, भविश्य का स्त्री विमर्श (2015) वाणी प्रकाशन दिल्ली।
5. श्रीधर, प्रदीप स्त्री चिंतन की अंतर्धाराएं और समकालिन हिन्दी उपन्यास दिल्ली।